1857 के क्रान्तिकारी आन्दोलन में अमोढ़ा राज्य का योगदान

रमेश चन्द्र
शोध छात्र, इतिहास विभाग
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ उत्तर–प्रदेश।

प्रो0 अवनीश चन्द्र मिश्र
इतिहास विभाग
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ उत्तर–प्रदेश।

शोध–सार

अमोढ़ा राज्य उत्तर–प्रदेश के जनपद बस्ती में हरैया तहसील के छावनी थाना से 2 किलोमीटर की दूरी पर राजा जालिम सिंह तिराहे से राम जानकी मार्ग पर दक्षिण तट पर स्थित है, अमोढ़ा राज्य की स्थापना सन् 1351 में राजस्थान के राजा कंस नारायण सिंह ने किया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के बीच जब अंग्रेजों के विरूद्व भारतीय जनमानस का एक समूह आक्रोसित होकर हथियार उठा रहा था, उसी समय पूर्वी उत्तर–प्रदेश के बस्ती जनपद (तत्कालीन गोरखपुर) में भी 1857 का आन्दोलन शुरू हुआ। बस्ती जनपद के विभिन्न स्थानों में अमोढ़ा राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण थी। सन् 1857 क्रान्तिकारी आन्दोलन में अमोढ़ा राज्य के शहीद होने का गौरव प्राप्त किया है। प्रस्तावित शोध पत्र में अमोढ़ा राज्य के योगदान का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी दिलाने में जितने भी निरन्तर संघर्ष हुए हैं उनमें उत्तर प्रदेश (तत्कालीन युनाइटेड प्रोविंस) की भूमिका प्रमुख रही हैं। प्रदेश का आम जनमानस हो या इसके क्षेत्रीय राजा सभी ने अपने स्तर से स्वयं के बलिदान की अमर गाथायें अपने पीछे छोड़ी हैं। इस गौरवशाली इतिहास में एक अध्याय आधुनिक उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद का भी नाम आता है। जो 1857 के क्रान्तिकारी आन्दोलन में युनाइटेड प्रोविंस का हिस्सा था। यहाँ का अमोढ़ा राज्य जिसकी स्थापना 1351 में जयपुर के राजा कंस नारायण सिंह ने यहाँ दुर्दात एवं लुटेरों के समूह जिन्हें ''भर'' कहा जाता था को परास्त करके की थी। अपने उत्तराधिकार के क्रम में आगे चलकर लगभग 6 वर्ष के एक अति अल्पकानील शासन के पश्चात् 1852 में राजा जंगबहादुर सिंह की मृत्यु के बाद जैसे ही रानी तलाश कुंवारि ने शासन की कमान अपने हाथ में ली राज्य पर अंग्रेजी शासन की कुदृष्टि तीव्र हो गयी। इस प्रकार अमोढ़ा राज्य और ब्रिटिश शासन के मध्य सीधा संघर्ष प्रारंभ हो गया। रानी ने 2 मार्च, 1558 में अपने वीरगति को प्राप्त होने तक अपने राज्य की स्वाधीनता को सुरक्षित रखने तथा अपनी प्रजा की खुशहाली को निरंतर बनाये रखने का प्रयास किया। इस शोध पत्र 1857 में क्रान्तिकारी आन्दोलन में अमोढ़ा राज्य के योगदान का वर्णन करने का प्रयास किया गया हैं।

अमोढ़ा राज्य के खण्डहर पर लगे शिलालेख के अनुसार यह राज्य सन् 915 ई0 के पूर्व भर राजाओं के अधिकार में था। वे बहुत भ्रष्ट थे। 'भर' शराब के नशे में राज्य की बहू–बेटियों की अस्मिता नष्ट करने में आनन्द प्राप्त करते थे। इससे अमोढ़ा राज्य की प्रजा को बहुत कष्ट उठाना पड़ता था यहाँ की प्रजा राज्य के शासकों से ऊब चुकी थी। गोण्डा जिले के छपिया स्टेशन के पास एक गाँव पतिजिया है। गाँव पतिजिया के धर्मदत्त पाण्डेय नाम से एक ब्राहमण थे। उनके यहाँ एक बहुत सुन्दर कन्या थी। कन्या की सौन्दर्य होने की बात 'भर' राजा के संज्ञान में आया, 'भर' राजा ने धर्मदत्त पाण्डेय के पास संदेश भेजा कि वह अपनी कन्या का विवाह भर

राजा से कर दे। इस सन्देश से अमोढ़ा राज्य की सामान्य जनता भड़क उठी, और धर्मदत्त पाण्डेय के समर्थन में चल पड़ी। कार्तिक पूर्णिमा के दिन राजस्थान के राजा कंस नारायण स्नान के लिए आये थे। धर्मदत्त पाण्डेय के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल राजा कंसनारायण के पास सहायता के लिए पहुँचा और अपनी कष्ट को विस्तार पूर्वक सुनाया राजा कंस नारायण जनता की पीड़ा सुनकर बहुत दुख हुआ राजा ने धमदत्त पाण्डेय से लिखित आश्वासन दिया और जनता से कहा कि मै चैत्र रामनवमी को अपनी सेना के साथ अयोध्या स्नान करने आऊँगा, राजा ने धर्मदत्त पाण्डेय से कहा कि आप 'भर' राजा को अपनी कन्या को विवाह करने की स्वीकृति इस शर्त के साथ दे, कि बारात में भर वंश के सभी सगे सम्बन्धी बारात में आयें, आप उन बारातियों के स्वागत के लिए पूर्ण रूप से मांस–मदिरा की व्यवस्था करें, इस व्यवस्था के लिए राजा ने आर्थिक सहयोग भी किया। धर्मदत्त पाण्डेय ने राजा कंस नारायण की कूटनीतिक व्यवस्था के अनुसार सारी व्यवस्था किया। भर राजा निर्धारित तिथि पर अपने सगे सम्बन्धियों के साथ विवाह करने गांव पतिजिया पहुँचा। 'भर' राजा को मांस–मदिरा के सेवन बहुत पसन्द था, पूर्व योजनानुसार सभी बारातियों को भरपूर मांस–मदिरा का सेवन करवाया गया। 'भर' बाराती नशे में धुत हो गये तो राजा कंस नारायण ने उन पर आक्रमण कर दिया 'भर' राजवंश सहित सभी सगे सम्बन्धी मौत के घाट उतार दिये गये, अमोढ़ा राज्य पर राजा कंस नारायण का अधिकार हो गया, इस प्रकार अमोढ़ा राज्य की स्थापना 1351ई0 से माना जाता है। सन् 1600ई0 में भारत में व्यापार करने आयी ईस्ट इण्डिया कम्पनी 18वीं सदी के मध्य तक इतनी शक्तिशाली हो गई कि उसने 1857ई0 की प्लासी की लड़ाई जीतकर भारत में राजनैतिक सत्ता प्राप्त कर ली। अगले 100 सालों में इंग्लैण्ड को साम्राज्य विस्तार की नीति, आर्थिक शोषण, प्रशासनिक व्यवस्था के दोषों के कारण भारत में उनके विरूद्व असंन्तोष व्याप्त हो गया और इसका परिणाम 1857ई0 के विद्रोह के रूप में सामने आया। 1857ई0 का स्वतंत्रता संग्राम भले ही असफल हो गया पर अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत्र बना रहा। सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद स्वतंत्रता आदोलन ने गति पकड़ी। नरम दल और गरम दल ने नेता अपने सिद्वान्तों के आधार पर स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे। पर जब दोनों ही विचार धाराऐं असफल होने लगी और दमन का चक्र बढ़ने लगा। तब एक नई विचार धारा के लोग जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार थे, इसके लिए उन्हें चाहे बल प्रयोग करना पड़े या हिंसा करनी पड़ी वो स्वतंत्रता प्राप्त करके ही रहेगें। इन स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के लिए अपना तन मन सब न्यौछावर कर दिया। 8वी शताब्दी के प्रारम्भ में जब वारेन हेस्टिंग्स आया तो उसने भी लखनऊ, फैजाबाद, कानपुर, इलाहाबाद, मेरठ की तरह अमोढ़ा राज्य पर भी अंग्रेजों का शासन स्थापित करना चाहता था, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। इसी क्रम में जितने भी लार्ड आये सभी ने इस राज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहा लेकिन अमोढ़ा राज्य के राजाओं ने अपने गौरवशाली परम्परा का निर्वाह करते हुए राज्य को अंग्रेजों का गुलाम नहीं होने दिया। अंग्रेजों का सामना करते–करते राज्य की शक्ति क्षीण होती गयी दूसरी तरफ अंग्रेज प्रभावशाली होते गये।

सन् 1852 में जब वीरांगना रानी तलाश कुँवरि अमोढ़ा राज्य की गद्दी पर बैठी तो अंग्रेजों ने सोचा कि महिला शासक निर्बल होती है क्यों न अमोढ़ा पर चढ़ाई कर उसे जीत लिया जाए। अग्रेजी सेना ने अमोढ़ा राज्य को घेर लिया, उत्तर पूर्व, पश्चिम से थल सेना तथा दक्षिण में सरयू नदी पर जल सेना लगा दी गयी। लेकिन रानी तलाश कँवरि ने जमकर सामना किया और बार–बार अंग्रेजों को हार का सामना करना पड़ा। रानी तलाश कुँवरि की तलवार की धार हीरे से बनी होती थी। रानी तलाश कुँवरि 5 वर्षो तक अंग्रेजो का सामना करती रही, लेकिन धीरे–धीरे शक्ति कमजोर होती गयी। फरवरी 1858ई0 में कर्नल ह्यूज ने एक बड़ी सेना लेकर अमोढ़ा राज्य पर आक्रमण कर दिया। रानी ने देखा कि उनकी

सेना शहीद हो चुके हैं, अब अंग्रेंजो का मुकाबला करना सम्भव नही होगा। उधर जनरल रो क्राफ्ट ने रानी को जिन्दा या मुर्दा पकड़ लाने के लिए अपनी सेना को आदेश दिया, रानी तलाश कुँवरि ने सोचा कि अंग्रेजों के हाथ पड़ने से अच्छा होगा कि मैं स्वयं अपनी जीवन लीला समाप्त कर दूँ। इसी संकल्प के साथ वह अंग्रेजो से लड़ते–लड़ते पखेरवा कुँवर 'सयम भवानी' के स्थान पहुँची, वहाँ अपने समर्थको को बुलाकर कहा कि, अब प्राण बचाना मुश्किल है, इसलिए मैं स्वयं कटार से अपनी जीवन लीला समाप्त कर दूँगी आप लोग मेरे शव को इस तरह छिपा देना कि अंग्रेजों को पता न चल सके। अपने इस वचन के बाद रानी तलाश कुँवरि ने अपनी कटार छाती में भोंक कर अपना प्राण अमोढ़ा राज्य की सुरक्षा में न्यौछावर कर शहीद हो गयी।

2 मार्च, 1858ई0 को रानी तलाश कुँवरि की मृत्यु के पश्चात् अंग्रेज अमोढ़ा को अपने अधिकार में लाने के लिए आगे बढ़े लेकिन रानी की मृत्यु सुनकर अमोढ़ा राज्य की जनता इतनी व्याकुल हो गयी कि स्वतंत्रता सेनानियों ने सोचा कि जीने से मरना अच्छा है। अमोढ़ा राज्य की जनता ने विद्रोह कर दिया, छावनी के पास पीपल के पेड़ से 50 मीटर की दूरी पर रामगढ़ के धर्मराज सिंह को 17 अप्रैल 1858ई0 को लेफ्टीनेंट कर्नल हेगवेडफोर्ड गिरफ्तार करके छावनी ला रहा था। कर्नल घोड़े पर सवार था, कर्नल की कटार जमीन पर गिर गयी कर्नल ने धर्मराज सिंह से कटार उठाने को कहा धर्मराज के हाथों में जैसे कटार आयी, धर्मराज कटार कर्नल हेगवेडफोर्ड की छाती में घुसेड़ दिया, जिससे कर्नल हेगवेडफोर्ड की मृत्यु हो गयी। कर्नल हेगवेडफोर्ड की समाधि अंग्रेजों ने उसी स्थान पर स्वयं बनवाई और शिलालेख भी लगवाया जो आज भी मौजूद है और हमारे वीरों के त्याग एवं बलिदान का साक्षी है। कर्नल हेगबेडफोर्ड की हत्या के बाद अमोढ़ा राज्य के स्वतंत्रता सेनानियों में उत्साह व प्रतिरोध करने का बल मिला, राज्य के पूरे क्षेत्र में क्रान्ति फैल गयी, इस क्रान्ति में कई अंग्रेज मारे गये, फलस्वरूप, अंग्रेजो ने भी दमन चक्र शुरू किया, और जितने भी स्वतत्रता सेनानी पकड़े जाते थे, उनको शहीद स्थल छावनी के पश्चिम दिशा में स्थित पीपल के पेड़ पर गले में रस्सी बांधकर लटका देते थे और उनकी लाश महीनों सड़ती रहती थी। इस पीपल के पेड़ पर लगभग 2000 लोगों को फॉसी दी गयी थी। पीपल का पेड़ वर्तमान में भी शहीद स्थल पर स्थित है। पेड़ के पास स्थित शिलालेख में कुछ शहीद स्वतंत्रता सेनानियों के नाम मिलते है।

पीपल पर फांसी पाये स्वतंत्रता सेनानी के नाम व पता

1. कप्तान श्री अवधूप सिंह – बभनगावां अमोढ़ा बस्ती।
2. श्री ईश्वरी शुक्ल– बेलाडे, बस्ती।
3. श्री कुलवन्त सिंह –घिरौली बाबू, बस्ती।
4. श्री सुग्रीम सिंह– जद्दूपुर (गुण्डाकुँवर) बस्ती
5. श्री सन्तबख्श सिंह –चनोख, डुमरियागंज, बस्ती
6. श्री जय सिंह – अटवा बस्ती
7. श्री धर्मराज सिंह – रामगढ़ बस्ती
8. सरदार मुहेम सिंह – जौनपुर
9. सूबेदार श्री भवन सिंह – गोण्डा
10. श्री हरिपाल सिंह–घिरौली बाबू बस्ती
11. श्री बनवीर सिंह– घिरौली बाबू बस्ती
12. श्री रिसाल सिंह –घिरौली बाबू बस्ती
13. श्री रघुवीर सिंह –घिरौली बाबू बस्ती
14. श्री लखपट राय –दौलतपुर बस्ती
15. श्री मुसर्रफ खां –जौनपुर
16. श्री जय नारायण सिंह –भानपुर बाबू, डुमरियागंज, बस्ती

अंग्रेजों शासन को वर्षो तक अपनी वीरता के दम पर अमोढ़ा राज्य ने अपने करीब नहीं भटकने दिया और भाँति–भाँति से अंग्रेजों को क्षति पहुँचायी, यह अतिशयोक्ति न होगी कि रानी तलाश कुँवारि अंग्रेजी शासन के आँख की किरकिरी बन गई थी। रानी युद्व शैली में माहिर थी। युद्व नीति अपने सैनिकों व सेनापति को बड़े ही कुशल तरीके से समझाती थी और आगे बढ़कर स्वयं कौशल का परिचय देते हुए युद्व का नेतृत्व करती थी। ऐसी अदम्य साहस और वीरता

का परिचय देते हुए रानी लताश कुँवरि 2 मार्च, 1858ई0 को वीरगति प्राप्त करने से पूर्व अपने सैनिकों को सम्बोधित की और अपने छाती में कटार घोंपकर जीवन लीला को समाप्त कर दिया, परन्तु अंग्रेजों के समक्ष समर्पण को स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार अमोढ़ा राज्य एक ऐसा गौरवशाली राज्य है, जिसने अंग्रेजी सत्ता के प्रतिरोध में अपने अदम्प शौर्य और राष्ट्र प्रेम का परिचय दिया।

सन्दर्भ सूचीः–

1. सिंह, हाकिम, 2008, स्वतंत्रता संग्राम में अमोढ़ा राज्य का गौरवशाली योगदान, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, फैजाबाद, प्र0सं0–22–25
2. श्रीवास्तव, डॉ0 बीरेन्द्र कुमार, 2010, स्वतंत्रता संग्राम में बस्ती मण्डल का योगदान, (1857–1947), शिवांक प्रकाशन नई दिल्ली, प्र0सं0–32–33
3. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बस्ती, उत्तर–प्रदेश, प्र0सं0 18–42
4. रिजवी,सैयद नजमुल रजा, 2018, 1857 विद्रोही जगत, पूर्वी उत्तर प्रदेश ओरियन्ट लैकस्टोन प्रा0लि0 प्रकाशन प्र0सं0–2829
5. गुपता, डॉ0 अयोध्या प्रसाद, महात्मा गांधी एवं स्वतंत्रता आंदोलन में मण्डल बस्ती का योगदान, जिला सूचना विभाग बस्ती पृ0स0 35–38
6. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बस्ती, उत्तर–प्रदेश पृ0सं0 20–22
7. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, गोरखपुर सप्लीमेन्ट्री नोटस, इलाहाबाद, 1921, 1935, पृ0 सं0–27–32
8. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, गोण्डा, उत्तर प्रदेश, 1905, पृ0सं0– 33 –34
9. नार्थ–वेस्ट प्राविन्सेज एण्ड अवध होम डिपार्टमेन्ट रेवेन्यू सबस्ट्रेक्ट प्रोसीडिंग्स 1956, सचिवालय रिकार्ड रूम लखनऊ।
10. उपाध्याय, राम मूरत 1965, गोरखपुर जनपद में स्वतत्रंता संघर्ष (1857–1947) शोध– प्रबन्धक, गोरखपुर, विश्वविद्यालय– पृ0सं0–30–99
11. उपरोक्त पृ0सं0–31–50
12. श्रीवास्तव, डॉ0 वीरेन्द्र कुमार, 2010, स्वतत्रंता संग्राम में बस्ती मण्डल का योगदान (1857–1947) शिवांक प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0सं0–45–65
13. उपरोक्त पृ0सं0–50–77
14. उपरोक्त पृ0सं0–102–104
15. सिंह, हाकिम, 2008, स्वतंत्रता संग्राम में अमोढ़ा राज्य का गौरवशाली योगदान, भवदीय प्रकाशन अयोध्या, फैजाबाद पृ0सं0–34–3
16. Canybeare: statistical Descriptive and historical account of Basti District, (Allahabad, 1881).
17. Foreign Department, Narth- Western Province, Narrative
18. (Abstract proceedings) narrative of events for Gorahpur for the week ending 5th April 1858, Secretariat Records Room Lucknw.